क्योंकि चली गई दूरी को ड्राइवरों के मेहनताने से जोड़ दिया गया है। पहाड़ों पर जाड़ों में पेट्रोल तक जम जाता है। वहां भी ड्राइवर बिना गर्म कपड़ों के गाड़ी चलाते हैं। वे सर्दी से कांपेंगे तो गाड़ी गिरेगी ही। प्राकृतिक आपदाओं से बचने को लोगों को संसाधन दिए जाने चाहिए। वे खुद अपना बचाव कर लेंगे।

वे पस्त से लग रहे थे। अपने ही आसन पर शिथिल। शायद वे अपने विचारों की हार महसूस करने लगे हैं- मैंने सोचा। शायद वे बदल रहे हैं। कोई आदमी कभी भी बदल सकता है।

उन्होंने जरा नरम आवाज में एक सवाल मेरी ओर फेंका- 'यह तो तुम मानोगे ही कि समाज में बलात्कार का कारण बढत्ती अनैतिकता है।'

मुझे लगा सवाल पर मेरी सहमति लेकर वे मुझसे समझौते की एक कोशिश कर लेना चाहते हैं- हारने से पहले।

पर मैंने समझौता नहीं किया। कहा, 'यह अनैतिकता भी हम-आप ही पैदा करते हैं शर्मा जी। बचपन से ही हम लड़के-लड़की में बनावटी दूरी बनाकर रखते हैं। इससे दोनों को एक दूसरे का शरीर एक रहस्यलोक लगने लगता है। यही रहस्य खोजने के लिए वे उल्टी सीधी हरकतें करते हैं। वर्जनाएं बढ़ती हैं तो वे अपराध भी कर डालते हैं।'

'तो लड़के-लड़कियों को कुछ भी करने के लिए छुट्टा छोड़ दिया जाए? तुम्हारा बस चले तो सारे समाज को अनैतिकता और अशांति के दलदल में डुबो दो।' वे बोले नहीं थे बल्कि गुर्राए थे इस बार।

तो मैंने गलत सोच लिया था, वे हारे नहीं थे, वे बदले भी नहीं थे। वे वही थे पुरातन, जड़ 'राष्ट्रीय' चिंतक।

'तुम नहीं सुधरोगे कहते हुए वे आसन से उठे और अपने 'लेट मार्निंग' वाक पर निकल गए।

द्वारा श्री भीमदत्त बहुगुणा
कैलाश गेट, मुनि की रेती
ऋषिकेश

आनंद दीवान
व्यंग्य

मार

जी, हम सैलाब के सफर में हैं। जल समाधि की ओर बढ़ रहे हैं। आपका भेजा पैकेट मिल गया। पार्टी का लेबल देख परख लिया। बच्चों ने नाश्ता नाव से किया। बिना मोहर वाले पैकेट वापिस कर दिए। सिक्काबंद वस्तुएं अधिक विश्वसीनय होती हैं। जिंदा रहे, फिर मिलेंगे। ताकि अगले चुनाव में आपके काम आ सकें। हमारे वालों को महांगई की मार से बचाएं, साहब वो जिंदा रहना चाहते हैं।

हाथी पांव

त्रासदी की भयंकर घड़ी। बाप-बेटी का मिलन। बेटी बाप के गले लग कर बिफर पड़ी। आंखों का पानी जो सूख चला था, यकायक, सैलाब बनकर उमड़ पड़ा। जिसने देखा, उसका दिल भर आया। एक भी शीशा नहीं बना जो इस मार्मिक दृश्य को स्थायी दृश्य प्रदान कर देता। सारा जगत बाप बेटी का रिश्ता बन जाता। कहावत है, हाथी के पांव में सबके पांव। कहावत झूठी थी। इन्हीं दोनों के पांव आ सके। बाकी के रह गए। मसलन, उनके, जहां दरस रुपए के बिस्किट दो हजार में बिके। उनके, जिनके पास दस रुपए भी नहीं थे। या फिर उनके जिनके पास बिस्किट थे, पैसे थे, वो स्वयं नहीं थे।

भुगतान

हरी झंडी मिलने पर भी रुका रहा। स्टार्ट नहीं हुआ। पहला दिन बीता। दूसरा दिन, फिर तीसरा. . .चालू करने के सभी प्रयास, व्यर्थ। इस तरह सप्ताह बीता, पंद्रह दिन, एक महीना. . .ट्रक जस का तस। क्षेत्रवासियों का सब्र टूट गया। भारी भीड़। राहत-सामग्री भेजने में इतनी देर। ट्रक चल क्यों नहीं रहा। ड्राईवर आनाकानी करता रहा। ट्रक बदलने की बात सोची जाने लगी। इन्क्वायरी भी बैठ गई। जांच से जो निष्कर्ष निकला, उसका लब्बोलुआब यह कि भुगतान डीजल का था। ट्रक की टंकी फुल थी पानी की।

मित्रलोक, 22 तिलक रोड, देहरादून

सुधा ओम ढींगरा
ब्रीफ केस में राष्ट्रप्रेम

- 'आप हिन्दी में उत्तर क्यों दे रहे हैं, जबकि हम आपसे प्रश्न अंग्रेजी में पूछ रहे हैं?' साक्षात्कार करने वाले ने पूछा।

- 'हमने विदेश से आपको हिन्दी बोलने के लिए नहीं बुलाया।' साक्षात्कार बोर्ड के दूसरे सदस्य ने कहा।

- 'श्रीमान आप मेरा जिस पद के लिए साक्षात्कार ले रहे हैं, वह ग्रामीण विकास योजना के अंतर्गत आता है और जिसके लिए मुझे ग्रामीणों से सीधा संवाद करना होगा। वह संवाद मैं अंग्रेजी में तो नहीं करूंगा, ग्रामीणों की भाषा में ही करूंगा और जिस राज्य के पद के लिए आपने मुझे बुलाया है, वहां के जन हिन्दी बोलते हैं।' डॉ. कुमार श्रीवास्तव ने अत्यधिक विनम्रता से उत्तर दिया।

- 'मिस्टर श्रीवास्तव आप हमें क्या समझाने की कोशिश कर रहे हैं। रूल इज़ रूल। आपको इंटरव्यू इंग्लिश में ही देना पड़ेगा। हिन्दी का ज्ञान विदेश के लिए रखें, वहां इसकी जरूरत है।' सामने वाले ने रुखाई और अभद्रता से उत्तर दिया।

- भद्रजन, जहां से आया हूं, अंग्रेजी तो मैं वहां हर समय बोलता हूं। अपनी विशेषज्ञता देशवासियों के साथ बांट कर देश के लिए कुछ करना चाहता था। सोचता था शायद कुछ बदलाव ला सकूं। स्वदेश लौटकर अपने लोगों में अपनी भाषा में काम करने के लिए इस पद को स्वीकार करना चाहता था। अब समझ में आया कि ग्रामीण योजनाएं क्यों इतनी 'सफल' हो रहीं और कैसे आप जैसे लोग सुफल प्राप्त कर रहे हैं।ऐसी कार्यप्रणाली में एग्रीकल्चर और लघुग्राम उद्योग की मेरी विशेषज्ञता भी कोई मेरी सहायता नहीं कर पाएगी।' कह कर डॉ. कुमार श्रीवास्तव ने अपना ब्रीफकेस उठाया, उसमें राष्ट्रप्रेम बंद किया और कमरे से बाहर चले गए।

101 Guymon Court, Morrisville,
NC-27560 USA